

डॉ. टिबेरियस राटा, पुराने नियम का धर्मशास्त्र, सत्र 3, वाचा निर्माता के रूप में परमेश्वर

© 2024 टिबेरियस राटा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिबेरियस राटा पुराने नियम के धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 3 है, वाचा निर्माता के रूप में परमेश्वर।

सभी को नमस्कार। आज, हम वाचा निर्माता के रूप में परमेश्वर के बारे में बात करने जा रहे हैं। तो बाइबल परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में प्रकट करती है, जिसने सब कुछ बनाया, जिसने हमें अपनी छवि में बनाया। लेकिन फिर उसे वाचा बनाने वाले और वाचा निभाने वाले परमेश्वर के रूप में वर्णित किया गया है।

अब, वाचा शब्द पहली बार उत्पत्ति में बाढ़ की कहानी में छंद छह से नौ में दिखाई देता है। यह पहली बार है जब वाचा शब्द दिखाई देता है। जब हम अलग-अलग परिभाषाओं को देखते हैं, तो वाचा दो पक्षों के बीच किया गया एक समझौता है जिसमें एक या दोनों पहले से तय कुछ कार्यों को करने या न करने की शपथ पर वादा करते हैं।

वाचा दो या दो से अधिक पक्षों के बीच एक गंभीर समझौता है जो किसी प्रकार की शपथ द्वारा बाध्यकारी होता है। इसलिए, जब हम प्राचीन निकट पूर्व को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि वाचा कोई अजीब चीज नहीं है। यह एक संधि की तरह है।

यह एक समझौते की तरह है। लोगों के बीच अनुबंध किए गए थे। राजाओं के बीच अनुबंध किए गए थे।

और फिर वास्तव में राजाओं और आम लोगों के बीच वाचाएँ बनाई गईं। लेकिन हम जिन वाचाओं के बारे में बात कर रहे हैं, वे वाचाएँ हैं जो परमेश्वर अपने लोगों के साथ बनाता है। और इसीलिए जब हम वाचाओं के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो हम अब्राहमिक वाचा से शुरू करते हैं, परमेश्वर अब्राहम के साथ वाचा बनाता है।

और यह पूरे धर्मग्रंथ के लिए मार्ग बताता है। और फिर परमेश्वर मूसा के साथ वाचा बांधता है। और फिर, यह उसके बाद होने वाली हर चीज़ को प्रभावित करता है।

परमेश्वर ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी। और फिर, बेशक, हमारे पास नई वाचा है। इसलिए जब हम पुराने नियम को देखते हैं, तो प्रयुक्त शब्द, वाचा के लिए प्रयुक्त मुख्य शब्द, बारित शब्द है, जो पुराने नियम में 100 से अधिक बार आता है।

जब हम नए नियम की बात करते हैं, तो शब्द डायथेके है। इसका अनुवाद वसीयतनामा, वाचा या इच्छा के रूप में किया जाता है और इसका इस्तेमाल लगभग 30 बार किया गया है। और अगर आप अपनी बाइबल देखें, तो आप देखेंगे कि वे पुराने और नए नियम में विभाजित हैं।

लेकिन आप इसे वास्तव में पुरानी और नई वाचा कह सकते हैं, या जैसा कि कुछ पुराने नियम के प्रोफेसर कहना पसंद करते हैं, पहली और दूसरी वाचा। मुझे याद है कि मेरे मित्र वाल्टर कैसर कहा करते थे कि नया नियम पुराने नियम का परिशिष्ट है। बेशक, वह केवल मज़ाक कर रहे थे।

लेकिन जब हम प्राचीन निकट पूर्व को देखते हैं, तो मैं फिर से चाहता हूँ कि हम समझें कि वाचाएँ बहुत, बहुत आम थीं। आपके पास सभी प्रकार की संधियाँ थीं, फिर से, सामान्य लोगों के बीच या राजाओं के बीच। राजाओं के बीच अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ वाचा भाषा का उपयोग करके की जाती थीं।

इनमें से बहुत सी भाषाएँ उस समय की थीं। इसलिए, एक राजा कहता था, अगर तुम अपनी बेटी की शादी मेरे बेटे से कर दोगे, तो मैं तुम्हारे देश पर आक्रमण नहीं करूँगा। दरअसल, यह शायद एक वाचा है जो सुलैमान ने फिरौन के साथ की थी।

फिर, आपके पास सुजरेन संधियाँ हैं जहाँ कोई व्यक्ति प्रभारी होगा और समझौते की शर्तों को निर्धारित करेगा। इसलिए, अगर कोई राजा किसी कम शक्तिशाली या किसी सामान्य व्यक्ति के साथ कोई वाचा बनाता है, तो वह एक सुजरेन संधि होगी। वे समान पक्ष नहीं हैं।

एक दूसरे पर अधिपति है। और यही बात हमें बाइबल की वाचाओं में भी मिलती है। परमेश्वर अधिपति है, और हम उसके अनुयायी हैं।

आप जानते हैं, हम ईश्वर से बातचीत नहीं करते। ईश्वर यह नहीं कहता कि, अरे, मैं तुम्हें 10 आज्ञाएँ देने जा रहा हूँ। मूसा बातचीत करके यह नहीं कहता कि, अरे, नौ आज्ञाएँ कैसी रहेंगी? नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।

एक सुजरेन समझौता और वाचा है। इसलिए, कभी-कभी, समान पक्षों के बीच वाचाएँ बनाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 21 में आपके पास अब्राहम और अबीमेलेक के बीच की गई वाचा है।

अबीमेलेक को एहसास हुआ कि परमेश्वर अब्राहम के साथ है। उसने कहा, अब वे यहाँ परमेश्वर की शपथ खाकर कहते हैं कि तुम मेरे साथ या मेरे वंशजों के साथ या मेरे वंशजों के साथ धोखा नहीं करोगे। लेकिन जैसे मैंने तुम्हारे साथ कृपा की है, वैसे ही तुम मेरे साथ और उस देश के साथ कृपा करना जिसमें तुम रहते हो।

और अब्राहम ने कहा, मैं शपथ खाऊँगा। और फिर, वे आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे के साथ वाचा बनाते हैं। 2 शमूएल 19 में, आपके पास एक समान वाचा है, लेकिन इस बार दाऊद राजा है और बरज़िल्लै है, 2 शमूएल 19।

लेकिन फिर से, हम जिन वाचाओं पर गौर करना चाहते हैं, वे वाचाएँ हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल की ओर से अपने लोगों के साथ बनाई हैं। जब हम इन वाचाओं को देखते हैं, तो अब्राहम सबसे पहले आता है। और फिर हम मूसा और दाऊद और, ज़ाहिर है, नई वाचा पर जा रहे हैं।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम यहोवा की वाचाओं के बारे में देखें कि वे एकतरफा हैं। एकतरफा का मतलब यह भी है कि उनका मतलब कुछ चीज़ों से हो सकता है। उनमें से एक यह है कि परमेश्वर वाचा की शर्तें और नियम बताता है।

फिर से, हम परमेश्वर के साथ बातचीत नहीं करते। इस वाचा में कहीं भी हम अब्राहम, मूसा या दाऊद को परमेश्वर के साथ बातचीत करते हुए नहीं देखते। जब परमेश्वर आता है और हमारे साथ वाचा बाँधता है, तो हम वाचा की शर्तों को या तो स्वीकार करते हैं या अस्वीकार करते हैं।

अब, विवाद का विषय यह है कि इनमें से कुछ वाचाओं में दायित्व या शर्तें हैं या नहीं। मैं यहाँ कहता हूँ कि परमेश्वर की वाचाओं में वादे और दायित्व दोनों हैं। अब, फिर से, क्या ये दायित्व शर्तें हैं? क्या शब्दार्थ में कोई अंतर है? क्या हो रहा है? इसका कारण यह है कि कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, इनमें से कुछ वाचाएँ बिना शर्त हैं।

लेकिन हमें सावधान रहना होगा कि हम इसका क्या मतलब निकालते हैं। उदाहरण के लिए, अब्राहम को दिए गए वादे इस अर्थ में बिना किसी शर्त के हैं कि, हाँ, परमेश्वर अब्राहम के बच्चों को पत्थरों से, चट्टानों से भी बड़ा कर सकता था। लेकिन अगर अब्राहम ने वाचा की शर्तों का पालन नहीं किया होता, तो परमेश्वर किसी और को चुन सकता था।

इसका एक उदाहरण खतने के मामले में है, जहाँ मूसा अपने बेटों का खतना नहीं करता है, और परमेश्वर उसे मारना चाहता है। इसलिए, वाचा तो जारी रहती, लेकिन मूसा को उस वाचा के आशीर्वाद से कोई लाभ नहीं होता। इसलिए, हाँ, सभी पुरुषों का खतना करना संभव है।

फिर से, यह एक शर्त है, और यह एक दायित्व है। हम इसे चाहे जो भी कहें, यह उन चीज़ों में से एक नहीं है जहाँ हम कह सकते हैं, ठीक है, मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ क्योंकि भगवान मुझ पर दयालु हैं। यह बाइबिल के पाठ की गलतफहमी है।

तो, सबसे पहले, हमें वादों को देखने की ज़रूरत है। और वादे सबसे पहले उत्पत्ति 12 में दिखाई देते हैं। इसलिए, जब हम अब्राहमिक वाचा को देखते हैं, तो अध्याय 12 महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं पर हमें पहली बार वादे मिलते हैं।

अध्याय 15 में, हमें शपथ के माध्यम से वाचा की पुष्टि मिलती है। और फिर 17 में, आपको खतने के माध्यम से वाचा का चिन्ह मिलता है। तो सबसे पहले, आपको आशीर्षे और वादे मिलते हैं।

और श्लोक 7 हमें तीसरा वादा देता है। मैं तुम्हारे वंशजों को यह देश दूँगा। इसलिए महान राष्ट्र, महान नाम, महान भूमि।

फिर से, ये महत्वपूर्ण वादे हैं जो बाकी पवित्रशास्त्र के लिए दिशा निर्धारित करेंगे। तो बहुत, बहुत महत्वपूर्ण वादे। परमेश्वर अब्राहम को आशीर्वाद देगा।

लेकिन मुद्दा सिर्फ अब्राहम को आशीर्वाद देने का नहीं है। अब्राहम को दूसरे राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद माना जाता है। पृथ्वी के सभी परिवार तुम्हारे ज़रिए आशीर्वाद पाएँगे।

तो, शुरू से ही, हम देखते हैं कि परमेश्वर हमेशा एक मिशनरी परमेश्वर बनना चाहता था। वह सिर्फ़ इस्राएल में ही दिलचस्पी नहीं रखता था। इस्राएल के ज़रिए, वह पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीर्वाद देना चाहता था।

और, बेशक, महान राष्ट्र, महान नाम, और फिर महान भूमि। इस बारे में सोचें कि इज़राइल के इतिहास में भूमि कितनी महत्वपूर्ण है। यह हमेशा एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

परमेश्वर ने उन्हें भूमि देने का वादा किया है। जब वे अवज्ञा करते हैं, तो परमेश्वर कहता है, मैं तुम्हें भूमि से ले जा रहा हूँ। और परमेश्वर कहता है कि जब वह उन्हें पुनर्स्थापित करेगा, तो मैं तुम्हें भूमि पर वापस ले जाऊँगा।

इसलिए, यह भूमि इस्राएल के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फिर, अध्याय 17 में, जब हमारे पास वाचा का चिन्ह, खतना है, तो हमारे पास वह भी है जिसे वाचा सूत्र कहा जाता है। वाचा सूत्र 17 में दिखाई देता है।

सात. मैं अपने और तुम्हारे बीच और तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश के बीच भी उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिए एक सदा की वाचा के रूप में अपनी वाचा बाँधूँगा कि मैं तुम्हारा और तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश का परमेश्वर रहूँगा। और मैं तुम्हें तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश को तुम्हारे परदेशियों की भूमि अर्थात् कनान देश सदा की वाचा के रूप में दूँगा।

और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। इसलिए, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। इसे वाचा सूत्र कहा जाता है।

और यह फिर से प्रकट होता है। यह मूसा की वाचा में फिर से प्रकट होता है। यह पूरे शास्त्र में दिखाई देता है क्योंकि, शुरू से ही, परमेश्वर अपने लोगों के साथ वाचा के रिश्ते में रहना चाहता था।

तो, परमेश्वर, जो सृष्टिकर्ता है, वह परमेश्वर, वाचा बनाने वाला भी है। लेकिन अध्याय 15 में एक महत्वपूर्ण अंश है जो इस वाचा की पुष्टि के बारे में बात करता है। और इसी कारण से कुछ विद्वानों ने कहा, देखिए, यह एक बिना शर्त वाली वाचा है।

फिर, परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया कि कैसे बछिया लानी है और कैसे बकरी लानी है। और उसने ये सब लाकर उन्हें आधा-आधा काट दिया और उन्हें एक-दूसरे के सामने रख दिया। लेकिन उसने पक्षियों को आधा नहीं काटा।

और जब शिकारी पक्षी शवों पर उतरे, तो अब्राम ने उन्हें भगा दिया। जब सूरज ढलने लगा, तो अब्राम को गहरी नींद आ गई, और देखो, उस पर भयानक और बड़ी-बड़ी घटनाएँ घटीं। तब यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय जान ले कि तेरी संतान पराए देश में परदेशी होकर रहेगी, और वहाँ दास बनकर रहेगी, और 400 वर्ष तक दुःख भोगेगी।

परन्तु मैं उन जातियों पर दण्ड लाऊँगा, जिनकी वे सेवा करते हैं, और उसके बाद वे बहुत सी सम्पत्ति लेकर निकलेंगे। और तुम तो अपने पितरों के पास शांति से जाओगे। तुम्हें अच्छे बुढ़ापे में दफ़नाया जाएगा, और वे चौथी पीढ़ी में यहाँ वापस आएँगे, क्योंकि एमोरियों का अधर्म अभी पूरा नहीं हुआ है।

जब सूरज ढल गया और अंधेरा छा गया, तो देखो, एक धुआँ उगलता हुआ बर्तन, आग का बर्तन और एक जलती हुई मशाल इन टुकड़ों के बीच से गुज़री। और उस दिन यहोवा ने अब्राम से यह कहते हुए वाचा बाँधी, कि मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा। तो, यह एक बहुत ही दिलचस्प अंश है क्योंकि पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यिर्मयाह में फिर से एक अंश को छोड़कर समारोह की व्याख्या करता हो।

फिर से, यह निर्णय के साथ संयोजन में है, जो कहता है, यदि आप वादे पूरे नहीं करते हैं, तो मैं आपको इन जानवरों की तरह आधे में काट दूँगा। तो, यहाँ विचार यह है कि शपथ यह थी। यदि मैं अपने सौदे का अंत नहीं करता, तो क्या मैं इन शवों की तरह बन सकता हूँ?

लेकिन इस पाठ में जो बात दिलचस्प है, वह यह है कि आम तौर पर, अगर आप किसी के साथ वाचा बाँधते हैं, तो आप दोनों ही इससे गुज़रेंगे। लेकिन पाठ में, ऐसा लगता है कि केवल ईश्वर ही इससे गुज़रता है, जो फिर से कुछ लोगों को इसे बिना शर्त वाचा कहने पर मजबूर कर देगा, जो फिर से यहाँ एक बहुत अच्छी बात है। विचार यह है कि ईश्वर कहता है, देखो, चाहे कुछ भी हो, मैं अपने सौदे का अंत करने जा रहा हूँ।

तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। मैं तुम्हारा नाम बड़ा करूँगा, और मैं तुम्हें एक महान, महान देश दूँगा। अब, परमेश्वर को अपना वादा पूरा करने में कितना समय लगा? खैर, जब हम निर्गमन अध्याय एक पर पहुँचते हैं, तो ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने अपने वादे पूरे किए, और इस्राएल एक महान राष्ट्र बन गया।

फिर यूसुफ़ और उसके सभी भाई और उस पीढ़ी के सभी लोग मर गए, लेकिन इस्राएल के लोग बहुत फलने-फूलने लगे और उनकी संख्या बहुत बढ़ गई। वे बहुत शक्तिशाली हो गए और बहुत बढ़ गए। इसलिए, देश उनसे भर गया।

तो, ऐसा लगता है कि कुछ सौ साल बाद, वादे और वाचा पूरी हो गई। वादा, वाचा का वादा, पूरा हुआ। इतना ही नहीं, न केवल वे एक महान राष्ट्र हैं, बल्कि बाइबिल के विवरण में प्राचीन निकट पूर्व में नाम का अर्थ प्रतिष्ठा के रूप में भी उनका एक महान नाम है।

उनका नाम महान है। कैसे? खैर, फिरौन उनसे डरता है। हम इसे अगली आयतों में देखते हैं।

अब मिस्र में एक नया राजा हुआ जो यूसुफ़ को नहीं जानता था। उसने लोगों से कहा, देखो, इस्राएल के लोग हमसे अधिक संख्या में और अधिक शक्तिशाली हैं। आओ, जब वे बढ़ेंगे तो हम उनके साथ चतुराई से पेश आएँगे।

और अगर युद्ध छिड़ जाता है, तो वे हमारे दुश्मनों से मिल जाते हैं और उनके खिलाफ लड़ते हैं और देश छोड़कर भाग जाते हैं। इसलिए, वे हमें उन पर भारी बोझ डालने के लिए मुखौटे या कार्यपालक नियुक्त करते हैं। इस प्रकार, हम देखते हैं कि पहले दो वादे पूरे हुए हैं।

इसके अलावा, निर्गमन 19 में, परमेश्वर ने इस्राएल को एक बहुत ही दिलचस्प नाम दिया है - अध्याय 19, पद पाँच में एक महान नाम। इसलिए, यदि तुम सचमुच मेरी बात मानोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो तुम मेरी निज सम्पत्ति ठहरोगे।

हिब्रू शब्द सेगुला। तो, ऐसा लगता है कि यह भी वादे की पूर्ति का एक और पहलू है। तो, निर्गमन की पुस्तक के अनुसार, इस्राएल एक महान राष्ट्र है, और इसका एक महान नाम है।

एक समस्या है। अभी तक कोई ज़मीन नहीं है। उन्हें वादा की गई ज़मीन अभी तक नहीं मिली है।

वादा यह है कि इस्राएल को यह भूमि तभी विरासत में मिलेगी जब हम यहोशू के अध्याय एक पर पहुंचेंगे। तो फिर, इसमें कुछ और, फिर से, कुछ सौ साल लगेगे क्योंकि हम जानते हैं कि निर्गमन की घटना 1446 में हुई थी। लेकिन जब हम वादों और इन वादों की पूर्ति को देखते हैं, तो हमें अंतिम पूर्ति को भी देखना चाहिए।

तो, यह एक तात्कालिक ऐतिहासिक पूर्ति है। लेकिन अगर हम यीशु के शब्दों को सुनें, जिन्होंने कहा कि पुराना नियम उनके बारे में बोलता है, तो हमें यह देखने की ज़रूरत है कि यह अब्राहमिक वाचा मसीह में कैसे पूरी होती है। और जब हम नए नियम में आते हैं, तो हम सीखते हैं कि यीशु के कारण हमारा एक महान नाम है।

1 यूहन्ना 3:1 में हम पढ़ते हैं और देखते हैं कि पिता ने हमें किस तरह का प्यार दिया है कि हम परमेश्वर की संतान कहलाएँ। क्या हमारा नाम महान है? हाँ, हमारा नाम महान है। हमें परमेश्वर की संतान कहा जाता है।

हम उनके लोग कहलाते हैं। आप जा सकते हैं। हम एक महान परिवार हैं।

अगर आप इस दुनिया में कहीं भी जाकर मसीह में भाई-बहनों को पा सकते हैं, तो हम विश्वासियों के इस महान राष्ट्र का हिस्सा बन जाएँगे। लेकिन वादा किए गए देश के बारे में क्या? क्या हमें ज़मीन का एक टुकड़ा मिलेगा? क्या हमें इज़राइल में एक रियल एस्टेट मिलेगा? खैर, मुझे उम्मीद है कि हमारा वादा किया गया देश इज़राइल में रियल एस्टेट के एक टुकड़े से बेहतर है, खासकर नेगेव में।

आप रेगिस्तान में नहीं रहना चाहेंगे। और पौलुस वास्तव में कहता है कि हमारी विरासत प्राचीन निकट पूर्व या इस्राएल में ज़मीन के एक टुकड़े से कहीं ज़्यादा बेहतर है। आज, गलातियों 3:13, मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया।

क्योंकि लिखा है, शापित है वह हर व्यक्ति जो पेड़ पर लटकाया जाता है, इसलिए मैं मसीह यीशु में, अब्राहम के आशीर्वाद से, अन्यजातियों के पास आता हूँ ताकि हम विश्वास के द्वारा आत्मा

प्राप्त कर सकें। न केवल हमें पवित्र आत्मा मिलती है, बल्कि हमें स्वर्ग भी मिलता है। अब, मैं तर्क दूंगा कि स्वर्ग, आज के इज़राइल में ज़मीन के एक टुकड़े से कहीं बेहतर है।

तो, वादा अब्राहम को दिया गया है, चाहे आप मानें कि वे बिना शर्त के हैं या नहीं। उनके पास निश्चित रूप से दायित्व हैं, लेकिन वे अंततः यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूरे होते हैं। और मैं चाहता हूँ कि हम इसे केवल अब्राहमिक वाचा के साथ ही न देखें।

यह मूसा के साथ सच है। यह दाऊद के साथ सच है। यह नई वाचा के साथ सच है।

वे इस्राएल के लोगों के लिए बनाए गए हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन अंततः, वे यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूरे होते हैं। और यदि आप मूसा की वाचा को देखें, जो इसके बाद आती है, तो हम मूसा की वाचा में जो देखते हैं वह बहुत ही दिलचस्प है। सभी वादों को देखें।

परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देगा। परमेश्वर अपने लोगों को बढ़ाएगा। परमेश्वर उन्हें कनान की भूमि देगा।

परमेश्वर उन्हें एक महान राष्ट्र बनाएगा। और फिर हमारे पास वाचा का सूत्र है। मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे लोग होंगे।

क्या हमने पहले भी कहीं ऐसा देखा है? हाँ। ये वादे नए वादे नहीं हैं। ये वही वादे हैं जो अब्राहम को दिए गए थे।

इसलिए इन वाचाओं को पहले अब्राहमिक वाचा और फिर मूसा की वाचा के रूप में देखने के बजाय, नहीं। हमें उन्हें समानांतर रूप से देखना होगा। वे तब तक समानांतर रूप से चल रहे हैं जब तक कि वे फिर से यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूर्णता नहीं पाते।

क्योंकि वादे एक जैसे हैं, मूसा की वाचा में जो बात अलग है वह यह है कि अगर अब्राहम की वाचा की शर्तों के बारे में कोई सवाल है, तो मूसा की वाचा की शर्तों के बारे में कोई सवाल ही नहीं है। क्योंकि यहाँ आपके पास अगर-तो वाली भाषा है जो बहुत ही स्पष्ट है।

अगर आप ऐसा करते हैं, तो आप धन्य हो जाएँगे। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप शापित हो जाएँगे। तो, अगर-तो भाषा स्पष्ट है, और वाचा की शर्तें स्पष्ट हैं।

और, बेशक, हमारे पास निर्गमन 20 में दी गई दस आज्ञाएँ हैं। उन्हें व्यवस्थाविवरण 5 में दोहराया गया है क्योंकि वे नई पीढ़ी को दी गई हैं जो वादा किए गए देश में प्रवेश करेगी। क्योंकि पहली पीढ़ी से, केवल 18 वर्ष और उससे कम उम्र के बच्चे ही वादा किए गए देश में गए थे।

जैसा कि आप जानते हैं, मूसा भी इसे हासिल नहीं कर पाया, और पुरानी पीढ़ी के केवल यहोशू और कालेब ही इसे हासिल कर पाए। फिर से, ये वादे पूरे हुए। उन्हें अंततः यहोशू की पुस्तक, अध्याय 1 में भूमि मिल जाती है। हम कथा वहीं से शुरू करते हैं।

फिर, अब्राहमिक वाचा की तरह ही, इसकी पूर्ति यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में है। और जब यीशु, पहाड़ी उपदेश में, वैसे, हमें व्यवस्था में यहाँ क्या चल रहा है, यह समझने में मदद करता है, क्योंकि यीशु ही एकमात्र व्यक्ति था जिसने व्यवस्था के अक्षर को पूरी तरह से पूरा किया। अब, कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, तिबेरियस, व्यवस्था वहाँ एक उच्च चीज़ थी।

कोई भी इसे नहीं रख सकता था। और भगवान उन्हें दिखाना चाहते थे कि वे इसे नहीं रख सकते। लेकिन यह सच नहीं है।

कानून वास्तव में न्यूनतम आवश्यकता थी। और अनुग्रह के अधीन रहना, न कि कानून के अधीन, वास्तव में, यीशु ने मानक को बढ़ाया है, न कि उसे कम किया है। हम बाद में इस पर विचार करेंगे जब हम कानून निर्माता के रूप में परमेश्वर के बारे में बात करेंगे।

लेकिन यीशु ने पहाड़ी उपदेश में वास्तव में इस तथ्य की ओर इशारा किया कि अनुग्रह के अधीन रहना, व्यवस्था के अधीन नहीं, स्तर को कम नहीं करता बल्कि स्तर को बढ़ाता है। यही बात यीशु ने अध्याय 5 में कही है। मत सोचो कि मैं मत्ती का, या यह मत सोचो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ। मैं उन्हें समाप्त करने नहीं आया हूँ बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ।

और फिर आपके पास ये अंश हैं जिनके बारे में आपने सुना है कि ऐसा कहा गया था, लेकिन मैं आपको बताता हूँ। फिर से, जब यीशु ने बार उठाया, तो आपने सुना कि ऐसा कहा गया था कि आपको हत्या नहीं करनी चाहिए। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह न्याय के लिए उत्तरदायी होगा।

तुमने सुना है कि कहा गया था कि तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री को वासना की दृष्टि से देखता है, वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका है। इसलिए, हमारे पास यह यीशु है जो बार को फिर से ऊपर उठा रहा है, न कि बार को नीचे गिरा रहा है।

तो, क्या पुरानी वाचा बुरी थी? क्या मूसा की वाचा बुरी थी? नहीं, परमेश्वर, यहजेकेल के माध्यम से कहता है, मैंने उन्हें अच्छे नियम दिए। ये नियम नहीं थे, लेकिन इब्रानियों की पुस्तक इस तथ्य की ओर इशारा करती है कि यह मूसा की वाचा प्रकृति में अस्थायी थी। जब तक नई वाचा नहीं आती, तब तक यीशु फिर से पूरा करेगा, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान ने इन वाचाओं के वादों को पूरा किया।

इब्रानियों में, आपको दो बार इब्रानी के लेखक द्वारा यिर्मयाह 31 से उद्धरण मिलते हैं। नई वाचा को एक बार पूरी तरह से उद्धृत किया गया है, जो इसे नए नियम में उद्धृत पुराने नियम से सबसे लंबा अंश बनाता है। और फिर, यहाँ इब्रानियों 8 से 10 में, इब्रानियों के लेखक इस तथ्य के बारे में बात करते हैं कि पुरानी वाचा अस्थायी प्रकृति की थी जब तक कि यीशु एक बार और हमेशा के लिए बलिदान नहीं बन गए।

तो, यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में सब कुछ पूरा हो गया है। बाद में, जब हम नई वाचा के बारे में बात करेंगे तो मैं यहाँ नई वाचा का उल्लेख और उद्घरण देने जा रहा हूँ। इसलिए, बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर एक वाचा बनाना चाहता है और लोगों के साथ वाचा के रिश्ते में रहना चाहता है।

सबसे पहले अब्राहम और मूसा के ज़रिए, और फिर हम दाऊद के पास पहुँचते हैं। 2 शमूएल 7 में, हमारे पास दाऊद की वाचा है, और वादे अब अब्राहम और मूसा की वाचा से थोड़े अलग हैं। आप जानते हैं, महान राष्ट्र, महान नाम, महान भूमि।

अब, 2 शमूएल में, आपके पास शाश्वत प्रेम और शाश्वत राजत्व है। अध्याय 7, श्लोक 15, श्लोक 14 से शुरू होता है। मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

जब वह अधर्म करेगा, तब मैं उसे मनुष्यों की छड़ी से, और मनुष्यों के समान कोड़ों से दण्ड दूँगा। परन्तु मेरी करुणा उस पर से न हटेगी, जैसे कि मैं ने शाऊल पर से हटा ली, जिसे मैं ने तेरे साम्हने से दूर कर दिया। और तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे साम्हने सदा स्थिर रहेगा।

तेरा सिंहासन हमेशा के लिए स्थापित रहेगा। इसलिए, ये बहुत महत्वपूर्ण वादे हैं। मैं तुझसे हमेशा प्यार करूँगा और तेरे सिंहासन पर बैठने के लिए कभी भी राजा की कमी नहीं होगी।

लेकिन यहाँ यह नोट बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर का वंशज बनाने का वादा बिना किसी शर्त के है, लेकिन निरंतर, निर्बाध शासन नहीं है। वास्तव में, सुलैमान ने मंदिर के समर्पण के समय अपनी प्रार्थना में यही कहा है।

और वहाँ परमेश्वर और सुलैमान के साथ बातचीत, यह बहुत, बहुत, बहुत स्पष्ट है। फिर से, आपके पास भाषा है। और हम जानते हैं कि सुलैमान, दुर्भाग्य से, लगातार अवज्ञा करता रहा और व्यवस्थित रूप से परमेश्वर की अवज्ञा करता रहा।

इसलिए, परमेश्वर सुलैमान से नाराज़ है। 1 राजा 11 में कहा गया है, और परमेश्वर कहता है, मैं राज्य को दो हिस्सों में बाँट दूँगा। और वास्तव में, वह ऐसा करता है।

922 में राज्य का विभाजन हो गया। 722 में उत्तरी राज्य गिर गया और कैद में चला गया। और फिर 587 में दक्षिणी राज्य गिर गया।

587 के बाद क्या होगा? कोई राजा नहीं रहेगा। खैर, लेकिन भगवान ने वादा किया था। बिल्कुल।

परमेश्वर ने सदा प्रेम और सदा राजत्व का वादा किया था। लेकिन एक निरंतर, निर्बाध शासन इस्राएल पर निर्भर था। और दुर्भाग्य से, उन्होंने अवज्ञा की।

और परमेश्वर न केवल उन्हें उनके देश से निकाल देता है, बल्कि उनके पास कोई राजा भी नहीं रहता। 587 के बाद, मंदिर भी नष्ट हो गया। तो यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में कैसे पूरा हुआ? खैर, यह पूरा हुआ क्योंकि यिर्मयाह ने नई वाचा का वादा किया।

लेकिन केवल इतना ही नहीं, यिर्मयाह यीशु को पुरोहिताई से जोड़ता है। यिर्मयाह 33, श्लोक 15 और आगे। खैर, सबसे पहले, 14 में, यह कहा गया है, देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घराने से की गई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा।

उन दिनों में, उस समय, मैं दाऊद के लिए एक धर्मी शाखा उगाऊँगा, और वह देश में न्याय और धार्मिकता का पालन करेगा। उन दिनों में, यहूदा बच जाएगा, और यरूशलेम सुरक्षित रूप से बसा रहेगा। और यह वह नाम है जिससे इसे पुकारा जाएगा: यहोवा हमारी धार्मिकता है।

क्योंकि यहोवा यों कहता है, दाऊद के पास इस्राएल के घराने की गद्दी पर बैठने के लिए एक आदमी की कमी कभी नहीं होगी। और लेवीय याजकों के पास मेरे सामने होमबलि चढ़ाने, होमबलि चढ़ाने और सदा बलिदान चढ़ाने के लिए एक आदमी की कमी कभी नहीं होगी। लेकिन हमारे पास एक समस्या है।

587 के बाद, कोई राजा नहीं था, और कोई लेवी पुजारी नहीं थे क्योंकि कोई मंदिर नहीं था। तो, जो हो रहा है, हमें बाद में उसकी पूर्ति को देखना होगा, और वह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में होता है। और यही हमें लूका अध्याय 1 में मिलता है। यीशु के जन्म के बाद, लूका अध्याय 1, आयत 32-35।

यहीं पर यीशु के जन्म की भविष्यवाणी की जा रही है। यह एक स्वर्गदूत है जो मरियम से बात कर रहा है। वह महान होगा और उसे परमप्रधान का पुत्र कहा जाएगा, और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा।

और वह इस्राएल के घराने पर सदा राज करेगा। तो, यह वादा किया गया राजा है। यह वह राज्य है जो हमेशा तक बना रहेगा।

यह राजा यीशु में है। इसलिए, दाऊद के वादे यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूरे होते हैं। पित्तुकुस्त के दिन भी यही होता है जब पतरस पित्तुकुस्त के दिन प्रचार करता है और उसे यह समझाना पड़ता है कि यहाँ क्या हो रहा है, कि यह यीशु ही है जिसके बारे में भविष्यवक्ता बात कर रहे हैं।

यह दाऊद नहीं है, बल्कि यह दाऊद का बेटा है। इसलिए, वे यीशु के बारे में बात कर रहे हैं। आपके पास ये सभी वादे हैं जो योएल की किताब से, भजन संहिता की किताब से किए गए हैं।

क्योंकि दाऊद स्वर्ग में नहीं चढ़ा, बल्कि खुद कहता है, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरा दाहिना हाथ बढ़ा, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बना दूँ। इसलिए इस्राएल के घराने को निश्चय जान लेना चाहिए कि परमेश्वर ने उसी यीशु को प्रभु और मसीह दोनों बनाया है, जिसे तूने क्रूस पर चढ़ाया है। इसलिए, अब्राहमिक, मूसा और दाऊदिक वाचाएँ यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूरी होती हैं।

नई वाचा क्यों? पुरानी वाचाओं में कुछ भी गलत नहीं था। समस्या उन लोगों में थी जो वाचा का पालन करने में विफल रहे। इसलिए, तब परमेश्वर यिर्मयाह के माध्यम से आता है और कहता है, मैं एक नई वाचा बनाने जा रहा हूँ।

वैसे, पूरे पुराने नियम में नई वाचा की अभिव्यक्ति केवल यहीं दिखाई देती है। अब, यह अवधारणा यहजेकेल की पुस्तक में भी मौजूद है, लेकिन जहाँ तक अभिव्यक्ति की बात है, नई वाचा केवल यहीं दिखाई देती है। और हदाशाह शब्द, जिसका अनुवाद नया है, का अर्थ एकदम नया या नवीनीकृत दोनों हो सकता है।

मुझे लगता है कि यहीं पर हम अनुवाद में थोड़ी परेशानी में पड़ जाते हैं क्योंकि जब सेप्टुआजेंट का अनुवाद किया जाता है, तो वे नए शब्द का अनुवाद एकदम नए के रूप में करते हैं। फिर कुछ लोगों को यह समझाना कि, ओह, नई वाचा बिल्कुल नई वाचा होनी चाहिए। लेकिन नहीं, अगर हम ध्यान से देखें, तो नई वाचा की प्रतिज्ञाएँ, कई मायनों में, पुरानी वाचा की प्रतिज्ञाओं का नवीनीकरण हैं।

वे बिलकुल नए नहीं हैं। अब कुछ बिलकुल नए तत्व हैं, जो बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं। यिर्मयाह 31, 31 से 34 में, हमें वादा किया गया नया वाचा मिलता है।

और अब सुनो, सुनते समय सोचो कि कौन से तत्व एकदम नए और नवीनीकृत हैं। देखो, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा, उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पूर्वजों से उस दिन बाँधी थी जब मैंने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था।

यहोवा की यह वाणी है, यद्यपि मैं उनका पति था, फिर भी उन्होंने मेरी वाचा तोड़ दी। परन्तु यह वही वाचा है जो मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, यहोवा की यह वाणी है। मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में डालूँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे।

क्या आपने इसे पहले कहीं और सुना है? हाँ, वाचा का सूत्र पहले आता है। अब, जो नया है वह है कानून का आंतरिककरण। परमेश्वर कहता है कि मैं इसे उनके दिलों में डालने जा रहा हूँ; मैं इसे उनके भीतर लिखने जा रहा हूँ।

और कोई भी अपने पड़ोसी या भाई को यह कहते हुए फिर कभी नहीं सिखाएगा कि, 'प्रभु को जानो, क्योंकि वे सब मुझे जान लेंगे, छोटे से लेकर बड़े तक, यहोवा की यही वाणी है। क्योंकि मैं उनके अधर्म को क्षमा करूँगा, मैं उनके पाप को फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा। क्या परमेश्वर ने वाचाओं को क्षमा किया? क्या परमेश्वर ने पुरानी वाचा में पापों को क्षमा किया? हाँ।

इसमें कहा गया है कि तुम इसे लाओ, और तुम्हारा पाप क्षमा हो जाएगा, यह क्षमा हो जाएगा, यह क्षमा हो जाएगा। लेकिन अब, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक बताती है, यह यीशु मसीह में एक बार और हमेशा के लिए बलिदान है। यह कैसे संभव है कि परमेश्वर हमारे भीतर अपना नियम डालेगा? खैर, फिर से, अभिव्यक्ति प्रकट नहीं होती है, लेकिन यह अवधारणा यहजेकेल 36 में

दिखाई देती है जब हमें इस बात का उत्तर दिया जाता है कि परमेश्वर का नियम हमारे दिलों में कैसे डाला जाता है।

यहेजकेल 36, पद 26 से शुरू करते हुए, परमेश्वर कहता है, मैं तुम्हें एक नया हृदय और एक नई आत्मा दूंगा जो मैं तुम्हारे भीतर डालूंगा। और मैं तुम्हारे शरीर से पत्थर का हृदय निकालकर तुम्हें मांस का हृदय दूंगा। और मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर डालूंगा और तुम्हें मेरी विधियों पर चलने और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहने के लिए प्रेरित करूंगा।

तो यह कैसे संभव है? केवल आत्मा के द्वारा। तो, नए नियम में, जो नया है वह यह तथ्य है कि आत्मा अब विश्वासी में वास करती है, जो कि पुराने नियम में नहीं था। पुराने नियम के समय में, पवित्र आत्मा कुछ लोगों पर कुछ निश्चित कार्य पूरा करने के लिए आती थी।

लेकिन अब नए करार के समुदाय में, हमारे अंदर पवित्र आत्मा है। इसलिए, हम नए करार के अधीन हैं। हम मूसा के करार से बंधे नहीं हैं, भले ही मूसा का करार बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह रहस्योद्घाटन और विनियामक दोनों है।

और हमारे लिए इसे पढ़ना और समझना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह बताता है कि परमेश्वर कौन है। लेकिन यीशु ने प्रभु के भोज में नई वाचा की स्थापना की जब उसने लूका 22:20 में कहा, "और इसी तरह, जब उन्होंने भोजन किया तो प्याला यह कहते हुए मेरे लहू में नई वाचा है कि यह प्याला तुम्हारे लिए उंडेला गया है।" इसलिए, यीशु ने प्रभु के भोज में नई वाचा की स्थापना की।

तो फिर वह इसका उद्घाटन करता है जब वह हमारे लिए क्रूस पर अपना खून बहाता है। क्योंकि यही वह समय है जब नई वाचा का उद्घाटन होता है। और 2 कुरिन्थियों 3 में, फिर पॉल कहता है, देखो, हम नई वाचा के सेवक हैं।

और इब्रानियों की पुस्तक में, फिर से इब्रानियों की ओर लौटते हुए, जब नई वाचा को यिर्मयाह से इब्रानियों की पुस्तक में उद्धृत किया जाता है, तो फिर से, आपको यह दो बार मिलता है। आंशिक रूप से अध्याय 8 में, पूरी तरह से अध्याय 8 में नहीं, क्षमा करें, और आंशिक रूप से अध्याय 10 में। लेकिन अध्याय 8 में, फिर से, इब्रानियों के लेखक ने यिर्मयाह 31 से 31 से 34 तक के पूरे अंश को उद्धृत किया है।

लेकिन फिर, इब्रानियों 10 में, वह सुनिश्चित करता है कि हम समझें कि यीशु एक बार और हमेशा के लिए बलिदान है। और यही बात हमें इब्रानियों 10, 12 और आगे के अध्याय 10 में मिलती है, और उसके द्वारा, हम एक बार और हमेशा के लिए यीशु मसीह के शरीर की भेंट के माध्यम से पवित्र हो गए होंगे।

देखिए, पुराने नियम के संतों को पहले तम्बू में जाना पड़ता था और फिर मंदिर में। उन्हें साल में तीन बार जाना पड़ता था। और फिर योम किप्पुर, प्रायश्चित्त का दिन, साल में एक बार होता था।

महायाजक अपने पापों और पूरे राष्ट्र के पापों के लिए दया के आसन पर खून छिड़कता था। लेकिन यीशु के साथ, यह एक बार और हमेशा के लिए बलिदान है। इसलिए यीशु वाचाओं और वाचा के वादों की पूर्ति है।

अब्राहम, मूसा, दाऊद और नई वाचा सभी यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में पूर्ण हुए हैं।

यह डॉ. टिबेरियस राटा द्वारा पुराने नियम के धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, वाचा निर्माता के रूप में परमेश्वर।